B.M.A. College, Baheri: Darbhanga
Date:- 21/10/2020
Deptt. of Sociology
By: Dr. Rajesh Kr.
Sociology

B.A. III
Paper - VII

विषय:- सामाजिक समस्याएँ

ऐसी कोई भी अवांछित तथा आपत्तिजनक दशा, स्थिति, आचार व्यवहार-प्रतिमान, जो किसी समाज के अधिकांश व्यक्तियों द्वारा असहनीय एवं निंदनीय माना जाता है तथा जिसके सुधार एवं निवारण के लिए सामूहिक क्रिया की आवश्यकता महसूस की जाती है, वे सामाजिक समस्या कहलाती है।

सामाजिक समस्याएँ सामाजिक-व्यवहारों के टूटने, भंग होने, अथवा विचलन की स्थिति की परिचायक हैं। अपराध, भ्रष्टाचार, वेश्यावृत्ति, भिक्षावृत्ति, मादक द्रव्यों का प्रयोग, बेरोजगारी, मानसिक रुग्णता, आत्महत्या तथा सामाजिक तनाव आदि सामाजिक समस्याओं के ही उदाहरण हैं। संबंधित सामाजिक समस्याओं के और अनन्त हैं। इनमें शिक्षा और बड़ों के प्रति घटती हुई के गिरते स्तर और ~~आस्था~~ व्यक्तिवादिता जैसी नैतिकता और मानवाधिकार-समस्याओं से लेकर सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़े साइबर अपराधों को भी शामिल किया जाता है। किसी भी समस्या के सामाजिक होने के लिए यह आवश्यक है कि वह स्थिति जन सम्पूर्ण व्यवस्था और प्रणाली को प्रभावित करे।

B.M.A. College, Baheri, Darbhanga

B.A. III
Paper - VII
Deptt. of Sociology

Date :- 21.10.2020
By Dr. Rajesh Kr.
Sociology

विषय :- घरेलू हिंसा

सामान्यतया: अपनी इच्छाओं को दूसरों पर थोपने के उद्देश्य से शारीरिक शक्ति का जान-बूझकर इस प्रकार प्रयोग कि जिससे दूसरे व्यक्ति आहत होते हैं, उनका अहित होता है. उन्हें नुकसान पहुंचता है उसे हिंसा कहते हैं. जब कि घरेलू हिंसा से यह तात्पर्य है कि जब किसी घर के अन्दर घर के सदस्यों द्वारा घर के बालक-बालिकाओं, महिलाओं एवं अन्य किसी का शारीरिक या शोषण किया जाता है, उसे मानसिक चोट पहुंचाई जाती है, जब उसका मन एवं आत्मा दुःखी होता है और बेवजह उसपर बल एवं दबाव का प्रयोग किया जाता है, घरेलू हिंसा कहलाता है।

यह घटना पूरी तरह से घर के चार-दीवारी के अन्तर्गत घटित होती है। इसमें पीड़ित किसी से शिकायत भी नहीं करता है अगर करता भी है तो लोग उसकी बातों पर विश्वास नहीं करते हैं, यह घरेलू हिंसा सचेतन एवं अचेतन दोनों प्रकार की हो सकती है। घरेलू हिंसा प्रायः अप्रत्यक्ष रूप से घटित होती है। इसका मनोवैज्ञानिक स्तर पर लक्ष्य पूरी तरह से सूक्ष्म होता है। इसकी प्रकृति भी जटिल होती है जो पहचान करना कठिन होता है, अधिक होती है।

B.M.A. College, Baheri, Darbhanga

B.A. III
Paper - VII
Deptt. of Sociology

Date:- 21/10/2020
By Dr. Rajesh Kr.
Sociology

विषय :- घरेलू हिंसा

सामान्यतः अपनी इच्छाओं को दूसरों पर थोपने के उद्देश्य से शारीरिक शक्ति का जान-बूझकर इस प्रकार प्रयोग कि जिससे दूसरे व्यक्ति आहत होते हैं, उनका अहित होता है. उन्हें नुकसान पहुँचता है उसे हिंसा कहते हैं. जब कि घरेलू हिंसा से यह तात्पर्य है कि जब किसी घर के अन्दर घर के सदस्यों द्वारा घर के अन्य किसी बालक-बालिकाओं, महिलाओं एवं अन्य का शोषण किया जाता है, उसे शारीरिक या मानसिक चोट पहुँचाई जाती है, जब उसका मन एवं आत्मा दुःखी होता है और बेवजह उसपर बल एवं दबाव का प्रयोग किया जाता है घरेलू हिंसा कहलाता है,

यह घटना पूरी तरह से घर के चार-दीवारी के अन्तर्गत घटित होती है। इसमें पीड़ित किसी से शिकायत भी नहीं करता है अगर करता भी है तो लोग उसकी बातों पर विश्वास नहीं करते हैं, यह घरेलू हिंसा सचेतन एवं अचेतन दोनों प्रकार की हो सकती है। सचेतन घरेलू हिंसा प्रायः मनोवैज्ञानिक स्तर पर घटित होती है। इसका लक्ष्य पूरी तरह से सूक्ष्म होता है। इसकी प्रकृति भी लघु होती है जोकि अचेतन इसकी सहनशीलता अविकृत होती है।